सावित्री बाई फुले जयंती के उपलक्ष्य में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

सैनी समाज, कर्मचारियों और अधिकारियों द्वारा विकास संस्थान के तत्वाधान में आयोजित सावित्री फुले जयंती के उपलक्ष्य में स्नेह-मिलन समारोह में मैं सभी परिवारजनों को प्रणाम करता हूं। जिस तरीके से महात्मा ज्योति राव फुले जी और माँ सावित्री बाई फुले जी ने इस समाज के नवनिर्माण में, समाज के सामाजिक परिवर्तन में, महिला शिक्षा के लिए संघर्ष किया, सामाजिक परिवर्तन को दिशा दी, सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने के लिए जन आंदोलन चलाया। उस परिस्थिति में जब बच्चियां पढ़ने नहीं जाया करती थीं, विद्यालय या महाविद्यालय में पढ़ने नहीं जाती थीं, एक ऐसा जन आंदोलन खड़ा किया, उसके कारण आज देश में महिलाएं हर क्षेत्र में नेतृत्व कर रही हैं।

अगर वह अलख नहीं जगाते, महिला शिक्षा का आंदोलन नहीं करते तो हमारा देश काफी पीछे रह जाता। उस समय सामाजिक रूढ़िवादी की परिस्थितियां थीं। उसी परंपरा को लोग मानते थे।

उस समय कोई महात्मा ही निकलता था, जब समाज की वर्तमान परिस्थिति के विपरीत धारा के अंदर चलकर समाज को एक सकारात्मक दिशा देता है। उस समय समाज को सकारात्मक दिशा की ओर ले जाना कितना कठिन काम था, जब हम उनके जीवन के बारे में पढ़ते हैं तो आज भी उनके जीवन से प्रेरणा मिलती है। आज भी हमें लगता है कि समाज में सामाजिक परिवर्तन के लिए अलख जगाना चाहिए। हमारी बेटियां समाज में आगे बढ़े, देश-प्रदेश में नेतृत्व करे।

सैनी समाज एक मेहतनकश समाज है, एक ईमानदार समाज है, कर्म प्रधान समाज है। व्यवस्था को परिवर्तन करने का सामर्थ्य रखने वाला समाज है। ये सब हमें वंशागत मिला है, हमें विरासत में मिली है। मैं आज भी जब कभी गांव या ढाणी में जाता हूं तो उस गांव-ढाणी के अंदर सामाजिक परिवर्तन की कोई अलख जगाता है तो सैनी समाज जगाता है। आप सभी विशेष रूप से माँ सात्रिवी की कृपा से पढ़े लिखे हैं। आज जब आप अलग-अलग विभागों में राजकीय, निजी सेवा में सर्विस कर रहे हैं तो आपकी बहुत ही जिम्मेदारी है कि जो कुछ भी हमें समाज से मिला है, हम किस तरीके से समाज को दे सकते हैं। हमारा समर्पण, हमारी सेवा, हमारा त्याग इस समाज को आगे ले जाएगा।

आजादी के 75 सालों बाद अभी भी हमें बहुत-से सामाजिक परिवर्तन करने की आवश्यकता है। अभी भी हमें शिक्षा, महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन के लिए कार्य करने की आवश्यकता है। हमें आर्थिक रूप से सशक्त समाज बनाने की आवश्यकता है, क्योंकि हमारे संस्कार और संस्कृति तो आध्यात्मिक धर्म की संस्कृति हैं। हमारे विचार भी उसी संस्कृति के विचार हैं, लेकिन हमें सामूहिकता से काम करने की आवश्यकता है, मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

जो हमें विरासत में मिला है, महात्मा जी की प्रेरणा हमें मिली है, सावित्री बाई फुले की प्रेरणा हमें मिली है। ऐसी महिलाओं के जीवन दर्शन को हमें पढ़ना चाहिए। उनकी जीवनी को पढ़ना चाहिए। उस समय उनकी कर्मशीलता, त्याग, समर्पण, सेवा, दर्शन को पढ़ना चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ियों को वही प्रेरणा मिले।

इस मौके पर मैं समाज के सभी बंधुओं को मां सावित्री बाई फुले जयंती पर बहुत - बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। यह जयंती हमें प्रेरणा देती है, कर्मयोगी बनने की दिशा देती है और उनके जीवन को समझने व उनके जीवन दर्शन को अपनाने की प्रेरणा देती है।

हम महात्माओं की जयंती पर हमेशा आते हैं। इस मौके पर, मैं आप सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं और बधाई देता हूँ। नए वर्ष में नए संकल्प के साथ, नए आत्मविश्वास के साथ, नई जिम्मेदारी के साथ हम महात्मा ज्योतिबा फुले व मां सावित्री बाई फुले के जीवन दर्शन को आगे लेकर जाएंगे और समाज में

नए परिवर्तन का इतिहास लिखेंगे। जो इतिहास हमारे पूर्वजों ने लिखा था, उस विरासत को हम आगे लेकर जाएंगे।

आप सभी का बहुत बहुत धन्यवाद।